विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग-दशम्

विषय-हिन्दी

|| अभ्यास-सामग्री ||

||सूरदास के पद ||

दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपनी कांपी में लिखें ।

जहां कोई दिक्कत हो तो संबंधित समूह प्रश्न करें ।

सूरदास के पद

सूरदास के पद का सार

यहाँ **सूरसागर** के **भ्रमरगीत** से चार पद लिए गए हैं। कृष्ण ने मथुरा जाने के बाद स्वयं न लौटकर उद्धव के जरिए गोपियों के पास संदेश भेजा था। उद्धव ने निर्गुण ब्रह्म एवं योग का उपदेश देकर गोपियों की विरह वेदना को शांत करने का प्रयास किया। गोपियाँ ज्ञान मार्ग की बजाय प्रेम मार्ग को पसंद करती थीं। इस कारण उन्हें उद्धव का शुष्क संदेश पसंद नहीं आया। तभी वहाँ एक भौंरा आ पहुँचा। यहीं से **भ्रमरगीत** का प्रारंभ होता है। गोपियों ने भ्रमर के बहाने उद्धव पर व्यंग्य बाण छोड़े। पहले पद में गोपियों की यह शिकायत वाजिब लगती है कि यदि उद्धव कभी स्नेह के धागे से बँधे होते तो वे विरह की वेदना को अनुभूत अवश्य कर पाते। दूसरे पद में गोपियों की यह स्वीकारोक्ति कि उनके मन की अभिलाषाएँ मन में ही रह गईं, कृष्ण के प्रति उनके प्रेम की गहराई को अभिव्यक्त करती है। तीसरे पद में वे उद्धव की योग साधना को कड़वी ककड़ी जैसा बताकर अपने एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़ विश्वास प्रकट करती हैं। चौथे पद में उद्धव को ताना मारती हैं कि कृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है। अंत में गोपियों द्वारा उद्धव को राजधर्म (प्रजा का हित) याद दिलाया जाना सूरदास की लोकधर्मिता को दर्शाता है।

सूरदास के प्रथम पद

पद

(1)

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‍यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

सूरदास के पद की व्याख्या- सूरदास के पद में गोपियां उधव को संबोधित करते हुए कहती हैं कि है उधव तुम वास्तव में बहुत भाग्यशाली हो जो प्रेम के बंधन से दूर रहे हो। तुम्हारा मन किसी के प्रेम में अनुरक्त नहीं है। किसी के प्रति तुम्हारे मन में प्रेम भावना भी जागृत नहीं होती, जिस प्रकार कमल के फूल की पत्तियां जल के पास होते हुए भी उससे ऊपर रहती हैं और जल की एक भी बूंद उन पर नहीं ठहरती और जिस प्रकार तेल की मटकी को जल में भिगोने पर उसके ऊपर जल की एक भी बूंद नहीं ठहरती उसी प्रकार तुम्हारे ऊपर भी कृष्ण के रूपाकर्षण और सौन्दर्य का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। वास्तविकता यह है कि आज तक तुम प्रेम रूपी नदी में उतरे ही नहीं हो, इसलिए न तो तुम प्रेम पारखी हो और न ही प्रेम की भावना जानने वाले हो।

सूरदास जी बताते हैं कि वे गोपियां उधव को कहती है कि हम तो भोली-भाली ग्रामीण अबलाएं हैं और हम श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य में इस प्रकार खो गए हैं कि अब उनस विमुख नहीं हो सकती। हमारी स्थिति उन चीटियों के समान है जो गुड़ के प्रति आकर्षित होकर उस से चिपट तो जाती है किंतु बाद में स्वयं को न छुड़ा पाने के कारण वही अपने प्राण त्याग देती है।